ISSN No. 2394-9996

स्वातंत्र्योत्तर लघुकथाओं में बदले जीवन मूल्य

डॉ. कलशेट्टी एम.के.
हिंदी विभाग
श्री. मा.पा. महाविद्यालय, मुरूम
ता. उमरगा जि. उस्मानाबाद.

लघुकथा आधुनिक युग की नयी विधा हैं। हिंदी गद्य की विधाओं के समान ही लघुकथा का जन्म एवं विकास भी आधुनिक काल की देन ही है। हिंदी साहित्य में अनेक नयी विधओं जैसे कहानी, उपन्यास, नाटक, एकांकी आदि का प्रादुर्भाव हुआ है। इसी तरह लघुकथा भी एक नवीनतम विधा है, ``लम्बी कहानी, लघु उपन्यास लघुकथा आदि हिंदी गद्य-साहित्य की नवीन विधाएँ है इनमें से भी `लघुकथा` नामक जिस विधा ने तेजी से विकास किया है, वह एकदम चौकानेवाला तथ्य है।``[1] स्वातंत्र्योत्तर हिंदी कथा साहित्य में उपन्यास और कहानी की तरह हिंदी साहित्य संसार में `लघुकथा` का महत्वपूर्ण योगदान रहा है।

`लघुकथा` दो शब्दों से निर्मित है `लघु` तथा `कथा` लघु का सामन्य अर्थ है छोटा इसके कई पर्याय है जैसे निम्न, अनु, हल्का। कथा का शाब्दिक अर्थ है कहना हिंदी साहित्य कोश में लघुकथा के बारे में लिखा गया है ``संभवतः लघुकथा शब्द अंग्रेजी के शार्ट स्टोरी शब्द का सीधा अनुवाद है। वैसे कहानी शब्द भी अंग्रेजी के शार्ट स्टोरी के लिए है। इस प्रकार लघुकथा कहानी में तात्विक दृष्टि से कोई अन्तर नही ंदीख पड़ता। व्यावहारिक दृष्टि से लघुकथा कहानी के छोटे रूप से अपना तात्पर्य रखती है पर यह कहना कि लघुकथा लम्बी कथा का सार रूप है, नितान्त भ्रमोत्पादक है।``[2]

लघुकथा में लेखक एक बड़ी कहानी के थीम को छोटे रूप में व्यक्त कर खत्म कर देता है। उसकी भाषा में बिहारी के दोहों और गालिब के शेरों की सी शक्ति है। लघुकथाओं ने पूरे आवेग और आवेश के साथ आज के समाज और आज की जिंदगी में व्याप्त छल को उजागर किया है। इस संदर्भ मे विक्रम सोनी लिखते है ``जीवन का सही मूल्य स्थापित करने के लिए व्यक्ति और उसका परिवेश, युगबोध को लेकर कम-से-कम और स्पष्ट सारगर्भित शब्दो में असरदार ढंग से कहने की विधा का नाम लघुकथा है।``[3] लघुकथा एक आधुनिक विधा है। मानव की

समूची उद्विग्नता छटपटाहट, विवशता, आक्रोश आदि ने जनम दिया है, लघुकथा के अव्यवस्था, झूठ मक्कारी, दम्भ, ढोंग एवं अनाचार आदि लघुकथा की सामुग्री है। लघुकथा आम आदमी के जीवन से जुड़ी हुई है। अन्य विधाओं की तरह जीवन के यथार्थ को अंकित करती है।

लघुकथाएँ आज की समस्याओं, सामाजिक विसंगतियों और नयी वैचारिकता और नयी मानसिकता की ओर इंगित करती है ओर स्वतंत्रता के बाद बदले जीवन मूल्य का यथार्थ चित्रण लघुकथा करती है। कुछ लघुकथाओं का चित्रण निम्नलिखिल है।

जगदीश कश्यप ने `ब्लॅक हार्स` लघुकथा में स्वतंत्रता के बाद बदले जीवनमूल्य का चित्रण किया है। आज पिता - पुत्र के संबंध बदल गये है। परिवार में पिता की एक अलग महत्ता होती है। लेकिन आज पिता-पुत्र की तरक्की, (प्रगती) के लिए अफसर के लिए शराब लाता है।

पुत्र ने बॉस को पार्टी दी है। बॉस ने जिस चीज की फर्माइश की है उसकी पूर्ति के लिए घर के भीतर आता है, पत्नी ज्यादा न पीने की हिदायत देती है, मॉ रूद्राक्ष की माला जपते हुये बेटे के मुँह से आती शराब की बू से दूर हटती है। बेटा मॉ से पिताजी के बारे में पूछता है - ``मॉ को अब अपने बैटे की इस हरकत पर गुस्सा नहीं आता कारण उसने नया मकान बनवाया था। बहन की शादी करवायी थी। लोक बाग उसे `अफसर` कहने लगे थे।``[4] पिताजी जब उसे स्वयं पूछने आते है कुछ कमी हो तो बताईए। उसे समझ में नहीं आता पिता से शराब कैसे मंगवाएँ। जिन्होंने जिंदगी भर बीड़ी को हाथ तक नहीं लगाया। उसे डर था पिता कहेंगे थूँकता हूँ तेरे तरक्की पर उन्होंने ऐसा कुछ नहीं कहा उन्होंने कहा ``देखो बेटे तुम अपने साहब के पास जाकर बैठो बता किस ब्रांन्ड की लानी है। उसका नशा हिरन सा हो गया वह इतना ही कह पाया `ब्लॅक हार्स`।``[5] पिता शराब लाने चले जाते है। अपने सारे सिद्धांत वे ताक पर रख देते है। यह लघुकथा युग की सच्चाई की ओर इशारा करती है। आज परिवार में जो बदलाव आया है इसका संकेत मिलता है।

आज का युवक जिम्मेदारी से भागने लगा है। पुत्र, माता-पिता कि जिम्मेदारी से छुटकारा पाने के लिए अपना ट्रान्सफर करवा लेते है। इसका जिक्र कुलदीप जैन ने `शोषण मुक्ति` लघुकथा में किया है।

`इस तरह` लघुकथा में कमल चौपड़ा ने आधुनिक युग में मॉ-बेटी के संबंधो में रिश्ते की मधुरिमता समाप्त हो चुकी है और व्यक्ति कितना स्वार्थी हो गया है।

इस बात का यथार्थ चित्रण दो बेटियाँ के संवाद से किया है। पहली बेटी दूसरी से कहती है कि उसे दिहाडी पर जाना है। इसलिए वह माँ को लेकर सरकारी अस्पताल जाए। दूसरी कहती है मुझसे नहीं होगा बुढिया को लिए अस्पताल के चक्कर मुझसे नहीं काटे जाते। फिर पुछती है मॉ के प्रति तुझसे अचानक प्यार कहॉ से आ गया। वह कहती है, अस्पताल के काम आसान नहीं होता कई धक्के खाने पड़ते है। तभी पहली दूसरी बेटी को समझाती है- ``अस्पताल के धक्के अवश्य खाने पडेंगे परंतु जो दवाइयाँ मुफ्त में वहॉ से मिलेगी, वे हम अम्मा को नहीं देंगे। वे दवाईयाँ बाजारवालेकेमिस्ट को बेच देंगे।``[6] दोनों इस आइडिया पर खुश हो जाती है। मॉ मरे या जिए उन्हें कोई लेना देना नहीं। जो दवाईयों के पैसे मिलेंगे वे महत्व के है। इससे यही पता चलता है कि व्यक्ति आज कितना स्वार्थ के कारण गिर गया है।

`साँप` लघुकथा में नरेशचन्द्र नरेश ने भाई- भाई के संबंधों को उजागर किया है। एक करोड़पति सेठ को गोदाम में साँप डस गया डॉक्टर ने कहा यदि वही साँप उसे लाकर दिया तो सेठजी की जान बच सकती है। सेठजी को दो पुत्र थे। बड़े पुत्र ने सोचा साँप पकड लाने पर डॅडी बच जायेंगे तो बुढ्ढा जायदाद पर साँप सा बैठेगा। माँ ने गुहार लगाई इसलिए छोटे पुत्र साँप को पकडकर लाता है। पकड़ते समय उसे भी साँप डसता है। डॉक्टर के सामने समस्या थी कि दोनों में से किसको बचाए बडा लडका डॉक्टर के पास जाकर पॉच हजार देता है - ``मम्मी की इच्छानुसार डैडी को बचाया जाए।``[7] कारण डॅडी मर जाने के बाद वह अकेला ही जायदाद का मालिक बन सकता है। भाई के कृत्य को वह महान बलिदान बताता है। यह लघुकथा आधुनिक युग में संबंधो में जो बदलाव आया है इसका जिक्र करता है।

`माँजी` लघुकथा में अशोक लव ने आज के बहुए सांस को अपने पास इसलिए रखना चाहती है ताकि उन्हें गृहकार्य और बच्चों से छुटकारा मिले और वह आजाद रहे तथा नोकरी पर जा सके। वही बहु ससुर को नहीं रख लेती कारण सांस से उन्हें कई फायदे है।

आज प्रेम का अर्थ वासनापूर्ती है। प्रेमी प्रेमिकाओं से संबंध कल्पना लोक के न होकर यथार्थ भूमि से जुड़े हुये है। प्रेम आज मानसिक कम शारीरिक भूख अधिक हो गयी है। `प्यार` लघुकथा में कुमार शिव से आधुनिक युग के प्यार में प्रेमी-प्रेमिका अपनी असलियत किस तरह छिपाते है इसका यथार्थ चित्रण इस लघुकथा में किया है। दोनों प्रेमी आम प्रेमियों की तरह बिछुडनेवाले थे ही फिर यथार्थ में मिलने उन्हें कौन रोक सकता है ``पेड़ के पीछे जाकर `यह` उसकी बाहों

में समा गयी। दोनों के अधर बहुत देर तक मिले रहे।"[8] लेकिन दोनों का मन कही ओर था। प्रेमी को मुवक्किलों का इंतजार था और प्रेमिका को मंगत्तर सुदीप का वह उसे पत्र लिखने बैठती है अभी-अभी गैरो के बाहों में मंगेत्तर को पत्र लिखने बैठना कितना अजीबो-गरीब है। प्यार में सरे आम झूठ बोला जाता है। कोई किसी के लिए मर जायेगा यह सिर्फ शब्दो तक सिमित है।

`झूठ नहीं` लघुकथा में अकंश्री ने पति - पत्नी के संबंधो में जो बदलाव आया है इसका चित्रण किया है। पति - पत्नी ने शादी के समय तय किया था कभी झूठ नही बोलेंगे। पति कभी पत्नी को शक से देखाता नहीं था। एक दिन पत्नी अपनी प्रेमी के साथ बेड़ रूम में थी तो पति आता है यह देखकर पत्नी प्रेमी को पिछवाडे के दरवाजे से निकाल देती है ओर पति का स्वागत करती है। पत्नी के अस्त-व्यस्थ कपडे और घबराहट देखकर पति कहता है किसी के साथ कुस्ती लडकर आयी हो। तब पत्नी उसका चुंबन लेकर कहती है "किसी पर पुरूष की ओर मैने आज तक आँख उठाकर भी नहीं देखा है।"[9] पत्नी ने झूठ नहीं कहा था वह अपने प्रेमी को आँख उठाकर नहीं पलके उठाकर देखती थी। पति-पत्नी के संबंधो में जो बदलाव आया है उसकी ओर यह कथा संकेत करती है।

दहेज का राक्षस किस स्तर तक पहुँचा है। दहेज के कारण समाज में फैली बुराईयाँ। लघुकथाकारों ने लघुकथा का सृजन किया है। `लाश उवाच` लघुकथा में योगेंन्द्र किसलय ने दहेज न लाने के कारण बहुओं के साथ किए जानेवाले दुर्व्यवहार का चित्रण किया है। नंगी सड़ती लाश शहर के बहार गंदे नाले के पास पड़ी हुयी थी अंतिम क्रिया के लिए कोई नहीं था। गिध्दों का झुंड वहाँ आया गिध्दों को नेता ने चोंच मारना चाहा लाश ने कहा रूको भाई लाश को बोलते हुए गिध्दों ने पहली बार देखा था। इसमें नारी जाती की पीड़ा है. "मुझे खाओं मत जिंदगी भर सब मुझे नोंचते खाते रहे है। अब मुझ मरी को खाने का पाप क्यों ओढो।"[10] दहेज न देने के कारण या कम देने के कारण बहु को नोंचा ही जाता है।

बलात्कार की घटनाएँ आज आम हो गयी है। `निबटान` लघुकथा में बलरामजी ने बलात्कार कर मजे में घुमनेवालों पर प्रहार किया है। कलुवा की पत्नी को चौधरी ने दिन भर अपने कोटी में बंद कर लिया था। कलुवा रिपोर्ट करने गाँव के बाहर निकला तो लठैता ने उसे मार-मार कर बेहोश कर दिया। ठाकुर ने उस पर दया दिखाई। उसे अस्पताल में दाखिल किया। थाना बहुत दूर था। वह थाना जानेवाला था तो थाना ही उसके घर आया थानेदार ने कलुवा को चोरी के इल्जाम में उसे गिरफ्तार किया "कलुवा कैदी बनकर जा रहा था चौधरी तथा ठाकुर हँस

रहे थे, चलो तीन सौ रूपयें में ही मामला निपटा गया।"[11] बलात्कार उसके बीबी पर ही हुआ और सजा भी उसे ही हुयी यह हमारे देश का न्याय है।

अंत में निष्कर्ष रूप में यह कहा जाता है कि हिंदी कथा साहित्य में लघुकथा एक नवीनतम विधा है। आज पिता-पुत्र के संबंधों मे बदलाव आया है। आज की बहुए सास को इसलिए पास रखना चाहती है कि गृहकार्य से छुट्टी मिलें। आज पति-पत्नी के संबंधो में बदलाव आया है। प्यार में प्रेमी-प्रेमिका अपनी असलियत छुपाते है। आज दहेज का राक्षस पूरे समाज में फैला है। आज बलात्कार की घटनाएँ आम हो गयी है।

संदर्भ सूची :-

1. हिंदी लघुकथा : स्वरूप एवं इतिहास - रमेशकुमार. पृ.क्र. 7
2. हिंदी साहित्य कोश भाग 1 - संपा धीरेंन्द्र वर्मा - पृ.क्र. 741.
3. लघुकथा : बहस के चौराहेपर - विक्रम सोनी - पृ.क्र. 5.
4. ब्लॅक हार्स - जगदीश कश्यप - सारिका 31 मार्च, पृ.क्र. 17.
5. ब्लॅक हार्स - जगदीश कश्यप - सारिका 31 मार्च, पृ.क्र. 17.
6. इस तरह - कमल चोपडा - पृ.क्र. 14.
7. साँप - नरेशचंद्र `नरेश` - पृ.क्र. 34.
8. प्यार - कुमार शिव - पृ.क्र. 27.
9. झूठ नही - कंकुश्री - पृ.क्र. 25.
10. लाश उवाच - योगेन्द्र किसलय - पृ.क्र. 46.
11. निबटान - बलराम - पृ.क्र. 56.

☆ ☆ ☆